THE VILLAGE
INTERNATIONAL SCHOOL
"We Nurture Dreams"

पाठ-04 -मनुष्यता – मैथलीशरण गुप्त

1. मनुष्य मात्र बंधूँ है से क्या तात्पर्य है?
2. कविता एवं कवि का नाम लिखिए?
3. सुमृत्यु किसे कहते हैं?
4. महापुरुषों जैसे कर्ण, दधीचि, सीबी ने मनुष्यता को क्या सन्देश दिया है इस कविता में?
5. किन पंक्तियों से पता चलता है ही हमें गर्व रहित जीवन जीना चाहिए?
6. अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
   समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
   परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी।
7. यह कविता व्यक्ति को किस प्रकार जीवन जीने की प्रेरणा देता है?
8. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
   विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढ़केलते हुए
   घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी ।
9. अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
   अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे ,वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।
10. इस कविता का क्या सन्देश है?